

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 11 अध्याय 13: हंस-गीता

25 September 2026



*भगवान् श्रीकृष्ण उद्धव को मन पर सत्त्वगुण के द्वारा विजय पाना सिखाते हैं, और फिर प्राचीन काल की एक दिव्य घटना का वर्णन करते हैं जब वे सनक-आदि चार कुमारों की शंका शान्त करने एक तेजस्वी हंस-रूप में अवतरित हुए थे — वही उपदेश जो आज हंस-गीता के नाम से सुरक्षित है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

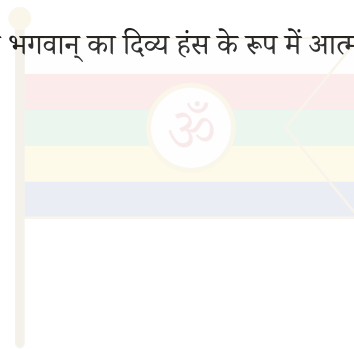
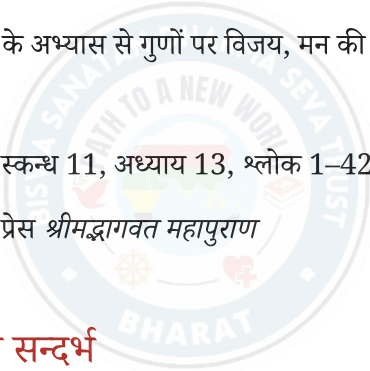
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है, जो श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा है। पिछले अध्याय में भगवान् ने सत्संग की महिमा गाई और उद्धव को केवल अपनी शरण लेने का आह्वान किया। अब वे मन के आन्तरिक संग्राम की ओर मुड़ते हैं। मन को संचालित करने वाले तीनों गुण — सत्त्व, रजस् और तमस् — बुद्धितत्त्व के अन्तर्गत आते हैं, आत्मा से उनका कोई सम्बन्ध नहीं, ऐसा वे समझाते हैं; सत्त्व को सुदृढ़ करने से साधक रजस् और तमस् को परास्त कर सकता है, और क्रमशः सत्त्व की सीमा से भी परे निर्मल शान्ति को प्राप्त हो सकता है। उद्धव जिज्ञासा करते हैं कि मनुष्य उन्हीं भोगों की ओर क्यों दौड़ता है जिन्हें वह स्वयं कष्टकारी मानता है, तो भगवान् रजोगुण की अस्थिर प्रकृति उद्धाटित करते हुए बताते हैं कि समझदार साधक अपने मन को पुनः-पुनः धैर्यपूर्वक कैसे वश में लाते

हैं। इसके बाद, उद्धव की प्रार्थना पर, वे एक दिव्य स्मृति का उल्लेख करते हैं: किस प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ में सनक तथा उनके भाइयों ने पिता ब्रह्मा से एक गहन प्रश्न पूछा था, जिसका उत्तर वे स्वयं न दे सके थे; और किस प्रकार साक्षात् भगवान् ने उनके सम्मुख एक तेजस्वी हंस का रूप धारण कर आत्मतत्त्व का परम रहस्य उद्घाटित किया — वही शिक्षा जो युगों से हंस-गीता, अर्थात् हंस के गीत के नाम से संरक्षित है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 11 (एकादश स्कन्ध)
- अध्याय: 13 (त्रयोदश प्रवचन)
- अध्याय शीर्षक: दिव्य हंस की गीता (हंस-गीता)
- प्रधान वक्ता: श्रीकृष्ण, उद्धव को उपदेश देते हुए; उनकी कथा के भीतर, भगवान् दिव्य हंस के रूप में सनक तथा उनके भाइयों को उपदेश देते हुए; समस्त सुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित को कहा गया
- प्रधान श्रोता: उद्धव; कथा के भीतर, सनक तथा सनकादि ऋषि एवं ब्रह्मा; तथा राजा परीक्षित
- मुख्य स्थान: द्वारका, भगवान् के उद्धव के साथ संवाद में; कथा के भीतर, सृष्टि के आदि में ब्रह्मा का लोक
- केन्द्रीय विषय: सत्त्व के अभ्यास से गुणों पर विजय, मन की चंचलता, तथा भगवान् का दिव्य हंस के रूप में आत्मा को साक्षी बताने वाला उपदेश
- प्रधान श्लोक-सीमा: स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 1-42
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 12 में, भगवान् ने सत्संग की महिमा गाई, स्मरण किया कि गोपियों ने शुद्ध प्रेम से उन्हें पाया, और उद्धव को केवल उनकी शरण लेकर समस्त भय से मुक्त होने का आह्वान किया, दिखाते हुए कि ज्ञान की कुल्हाड़ी अहंकार का बन्धन कैसे काटती है। यह अध्याय उसी आन्तरिक उपदेश को आगे बढ़ाता है, मन तथा प्रकृति के गुणों पर विजय की ओर मुड़ते हुए, और उसे दिव्य हंस की प्राचीन गीता से मुकुटित करता है।

सत्त्व के अभ्यास से गुणों पर विजय

भगवान् ने आरम्भ में प्रकट किया कि प्रकृति के तीन गुण — सत्त्व, रजस् तथा तमस् — बुद्धि के हैं, आत्मा के नहीं। सत्त्व को दृढ़ करके मनुष्य रजस् तथा तमस् को वश में कर सकता है, और अन्ततः शान्त वैराग्य के द्वारा सत्त्व से भी ऊपर उठ सकता है।

श्रीभगवानुवाच

सत्त्वं रजस्तम इति गुणा बुद्धेर्न चात्मनः ।

सत्त्वेनान्यतमौ हन्यात् सत्त्वं सत्त्वेन चैव हि ॥ १ ॥

*śrī-bhagavān uvāca sattvaṁ rajas tama iti guṇā buddher na cātmanaḥ sattvenānyatamau hanyāt
sattvaṁ sattvena caiva hi*

अर्थ: भगवान् ने कहा: सत्त्व, रजस् तथा तमस् बुद्धि के गुण हैं, आत्मा के नहीं। सत्त्व से मनुष्य रजस् तथा तमस् दोनों पर विजय पाए, और फिर शान्त वैराग्य रूपी सत्त्व से सत्त्व को भी। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 1)

दृढ़ हुए सत्त्व से, उन्होंने कहा, उनके प्रति भक्ति उत्पन्न होती है; और सत्त्व स्वयं सात्त्विक वस्तुओं से पोषित होता है — पवित्र शास्त्र, जल, संग, स्थान, समय, कर्म, जन्म, ध्यान, पावन मन्त्र तथा शुद्धिकरण संस्कार — और उस सबसे विमुख होकर जिसे विवेकी जन निन्दित मानते हैं। जैसे-जैसे सत्त्व बढ़ता है, शरीर तथा उसके गुणों के विषय में अज्ञान ज्ञान से दूर होता है; और परिवर्तनशील गुणों से उत्पन्न शरीर अन्ततः स्वयं जलकर शान्त हो जाता है, बाँस की रगड़ से जगी अग्नि के समान।

वेणुसङ्घर्षजो वह्निर्दग्धा शाम्यति तद्वनम् ।

एवं गुणव्यत्ययजो देहः शाम्यति तत्क्रियः ॥ ७ ॥

*veṇu-saṅgharṣa-jo vahnir dagdhvā śāmyati tad-vanam evaṁ guṇa-vyatyaya-jo dehaḥ śāmyati
tat-kriyaḥ*

अर्थ: जैसे बाँस की रगड़ से उत्पन्न अग्नि समस्त वन को जलाकर फिर शान्त हो जाती है, वैसे ही गुणों के परस्पर संघर्ष से उत्पन्न शरीर अन्ततः स्वयं को भस्म करके शान्त हो जाता है। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 7)



भगवान् प्रकृति के परिवर्तनशील गुणों से उत्पन्न शरीर की तुलना बाँस की रगड़ से जगी अग्नि से करते हैं — जो वन को जलाकर फिर स्वयं शान्त हो जाती है (श्लोक 7)।

हम वही क्यों चाहते हैं जो हमें हानि पहुँचाता है

तत्पश्चात् उद्धव ने एक अत्यन्त मानवीय प्रश्न पूछा: यदि लोग सामान्यतः जानते हैं कि इन्द्रिय-सुख दुःख का स्रोत हैं, तो वे उनका पीछा फिर भी क्यों करते हैं?

श्रीउद्धव उवाच

विदन्ति मर्त्याः प्रायेण विषयान् पदमापदाम् ।

तथापि भुञ्जते कृष्ण तत्कथं श्वखराजवत् ॥ ८ ॥

śrī-uddhava uvāca vidanti martyāḥ prāyeṇa viṣayān padam āpadām tathāpi bhuñjate kṛṣṇa tat katham śva-kharāja-vat

अर्थ: उद्धव ने कहा: लोग सामान्यतः जानते हैं कि विषय आपदाओं के स्थान हैं; फिर भी, हे कृष्ण, वे उनका भोग कुत्ते, गधे या बकरे की भाँति क्यों करते हैं? (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 8)



उद्धव एक अत्यन्त मानवीय प्रश्न पूछते हैं — लोग उन्हीं इन्द्रिय-सुखों का पीछा क्यों करते हैं जिन्हें वे दुःखदायी जानते हैं? (श्लोक 8)।

भगवान् ने उत्तर दिया कि रजस्, सत्त्व से उत्पन्न मन में भी उमड़कर, उसे चंचल तृष्णा से भर देता है; अविवेकी व्यक्ति, उस प्रचण्ड वेग से अभिभूत होकर, सुख के पीछे बह जाता है। किन्तु जो विवेकी है, यद्यपि उसका मन भी कभी रजस् तथा तमस् से विचलित होता है, वह उसे प्रयत्न से पुनः समेट लेता है, इन्द्रिय-सुख की हानि के प्रति सजग रहते हुए, और आसक्त नहीं होता। उसे प्राण को वश में करना, दृष्टि स्थिर करनी, और नियत समयों पर मन को धीरे से समेटकर केवल भगवान् पर स्थिर करना चाहिए — वही योग, उन्होंने कहा, जो उन्होंने कभी ब्रह्मा तथा ऋषियों को सिखाया था।

सनक तथा उनके भाइयों का प्रश्न

इस पर उद्धव ने पूछा कि भगवान् ने वह योग सनक तथा उनके भाइयों को कब तथा कैसे सिखाया। तब भगवान् ने वह पावन स्मृति सुनाई। बहुत पहले, ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों — सनक तथा उनके भाइयों — ने अपने पिता से एक सूक्ष्म प्रश्न पूछा: चूँकि मन स्वभावतः विषयों से विपकता है, और विषय मन पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं, तो इन दोनों को एक-दूसरे से कैसे पृथक् किया जाए? ब्रह्मा, अपने सृष्टि-कार्य में लीन तथा उसकी गहराई तक न देख पाने के कारण, सहायता हेतु अपना मन भगवान् पर स्थिर किया। और भगवान्, उत्तर का संकेत देने के लिए, उनके समक्ष एक हंस के रूप में प्रकट हुए — वह पक्षी जो दूध को जल से पृथक् कर देता है, ऐसा कहा जाता है।

स मामचिन्तयद् देवः प्रश्नपारतितीर्षया ।

तस्याहं हंसरूपेण सकाशमगमं तदा ॥ १९ ॥

sa mām acintayad devaḥ praśna-pāra-titīrṣayā tasyāham haṁsa-rūpeṇa sakāśam agamaṁ tadā

अर्थ: प्रश्न के पार पहुँचने की इच्छा से ब्रह्मा ने अपना मन मुझ पर स्थिर किया; और तब मैं उनके समक्ष हंस के रूप में आया। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 19)



ब्रह्मा की पहुँच से परे एक प्रश्न का उत्तर देने के लिए, भगवान् ऋषियों के समक्ष एक तेजस्वी हंस के रूप में प्रकट होते हैं — वह पक्षी जो दूध को जल से पृथक् करने में प्रसिद्ध है, यह संकेत देते हुए कि आत्मा को मन से कैसे पृथक् किया जाए (श्लोक 19)।

उस तेजोमय हंस को निहारकर सनक-आदि ऋषि निकट आए, श्रद्धापूर्वक चरण-वन्दन किया, विनम्रतापूर्वक ब्रह्मा को अपने आगे खड़ा किया, और फिर जिज्ञासा प्रकट की, “आप कौन हैं?”

दृष्ट्वा मां त उपव्रज्य कृत्वा पादाभिन्दनम् ।

ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा पप्रच्छुः को भवानिति ॥ २० ॥

dṛṣṭvā mām ta upavrajya kṛtvā pādābhivandanam brahmāṇam agrataḥ kṛtvā papracchuḥ ko bhavān iti

अर्थ: मुझे देखकर, ऋषि समीप आए, मेरे चरणों में प्रणाम किया, ब्रह्मा को आगे रखा, और पूछा, “आप कौन हैं?” (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 20)

हंस का उत्तर — सब कुछ एक ही आत्मा है

भगवान् ने, हंस के रूप में, एक गहन उत्तर दिया। यदि आत्मा एक अखण्ड सत्ता है, उन्होंने कहा, तो “आप कौन हैं?” यह प्रश्न उसे अन्ततः विभाजित नहीं कर सकता; जो कुछ मन से ग्रहण किया जाता है, वाणी में व्यक्त होता है, या इन्द्रियों से जाना जाता है, वह उन्हीं से भिन्न कुछ नहीं है।

मनसा वचसा दृष्ट्या गृह्यतेऽन्यैरपीन्द्रियैः ।

अहमेव न मत्तोऽन्यदिति बुध्यध्वमञ्जसा ॥ २४ ॥

manasā vacasā dṛṣṭyā grhyate 'nyair apīndriyaiḥ aham eva na matto 'nyad iti budhyadhvam añjasā

अर्थ: जो कुछ मन से, वाणी से, दृष्टि से या अन्य इन्द्रियों से ग्रहण किया जाता है, वह मैं ही हूँ, और मुझसे भिन्न कुछ नहीं है; इसे सत्य तथा तत्काल जानो। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 24)

मन विषयों से चिपकता है, उन्होंने समझाया, और विषय मन पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं; किन्तु दोनों शरीर के हैं, आत्मा के नहीं। जो आत्मा उनके साथ एक हो जाती है, वह दोनों को त्यागकर अपने सच्चे स्वरूप में विश्राम करती है। और उन्होंने महान् कुंजी प्रकट की: जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति बुद्धि की अवस्थाएँ हैं, गुणों से उत्पन्न — जबकि आत्मा इन सबसे पृथक् खड़ी है, उनकी मौन साक्षी।

जाग्रत् स्वप्नः सुषुप्तं च गुणतो बुद्धिवृत्तयः ।

तासां विलक्षणो जीवः साक्षित्वेन विनिश्चितः ॥ २७ ॥

jāgrat svapnaḥ suṣuptam ca guṇato buddhi-vṛttayaḥ tāsāṃ vilakṣaṇo jīvaḥ sākṣitvena viniścitaḥ

अर्थ: जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति प्रकृति के गुणों से उत्पन्न बुद्धि की अवस्थाएँ हैं; आत्मा इन सबसे भिन्न है, उनकी साक्षी के रूप में सुनिश्चित। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 27)



हंस महान् कुंजी प्रकट करते हैं — जाग्रत्, स्वप्न तथा सुषुप्ति मन की क्षणिक अवस्थाएँ हैं, जबकि आत्मा उनकी मौन, अपरिवर्तनशील साक्षी के रूप में पृथक् खड़ी है (श्लोक 27)।

जब तक पृथक् वस्तुओं की वास्तविकता का भाव बना रहता है, भगवान् ने कहा, तब तक मनुष्य जागते हुए भी सोया हुआ है, जैसे कोई स्वप्न के भीतर स्वप्न देखता है। अतः, उनमें स्थित होकर, हृदय में विराजमान परम में, ऋषि मन तथा इन्द्रिय के मिथ्या बन्धन को त्यागकर आत्मा में विश्राम करें — जागे हुए, गुणों की लीला से अछूते, उस व्यक्ति के समान जो स्वप्न से जाग गया हो।

ऋषि जाग उठे, और हंस लौट जाते हैं

इस प्रकार दिव्य हंस द्वारा उनका महान् सन्देश दूर होने पर, सनक तथा उनके भाइयों ने भगवान् की परम भक्ति से उपासना की और स्तुति-गानों से उनका गुणगान किया। ऋषियों द्वारा सम्मानित तथा पूजित होकर, भगवान् ब्रह्मा के देखते ही अपने धाम लौट गए।

तैरहं पूजितः सम्यक् संस्तुतः परमर्षिभिः ।

प्रत्येयाय स्वकं धाम पश्यतः परमेष्ठिनः ॥ ४२ ॥

*tair aham pūjitaḥ samyak saṁstutaḥ paramarṣibhiḥ pratyeyāya svakaṁ dhāma paśyataḥ
parameṣṭhinaḥ*

अर्थ: उन महान् ऋषियों द्वारा भली-भाँति पूजित तथा स्तुत होकर, मैं ब्रह्मा के देखते ही अपने धाम लौट गया। (स्कन्ध 11, अध्याय 13, श्लोक 42)



अपना सन्देह दूर होने पर, ऋषि दिव्य हंस की उपासना तथा स्तुति करते हैं, जो तब ब्रह्मा के देखते ही अपने परम धाम लौट जाते हैं (श्लोक 42)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. गुण मन के हैं, आत्मा के नहीं। सत्त्व, रजस् तथा तमस् बुद्धि के गुण हैं; आत्मा उनसे सदा अछूती है (श्लोक 1)।
2. सत्त्व का अभ्यास करें, फिर उससे भी ऊपर उठें। पवित्र संग, आहार, स्थान तथा अभ्यास से सत्त्व को दृढ़ करके मनुष्य रजस् तथा तमस् को जीतता है — और अन्ततः शान्त शान्ति में सत्त्व से भी ऊपर उठता है (श्लोक 1-7)।
3. रजस् हमें उसका पीछा कराता है जो हानि पहुँचाता है। सत्त्व में स्थित मन भी चंचल रजस् से भर सकता है; विवेकी जन बार-बार कोमलता से मन को समेटते हैं, इन्द्रिय-सुख के दुःख के प्रति सजग रहते हुए (श्लोक 8-13)।
4. नियत समयों पर मन को भगवान् पर स्थिर करें। प्राण तथा दृष्टि को स्थिर कर मन को उन पर समेटकर, साधक वही योग अभ्यास करता है जो भगवान् ने ब्रह्मा तथा ऋषियों को सिखाया (श्लोक 13-14)।
5. भगवान् स्वयं आत्मतत्त्व की शिक्षा देने हंस-रूप में प्रकट हुए। ब्रह्मा को भी उलझा देने वाले एक प्रश्न का समाधान करने, वे हंस बनकर आए, और प्रकट किया कि द्रष्टा तथा दृश्य के बीच वास्तव में कोई भेद नहीं है (श्लोक 15-24)।
6. आत्मा समस्त अवस्थाओं की साक्षी है। जाग्रत्, स्वप्न तथा सुषुप्ति मन की हैं; आत्मा उनकी अपरिवर्तनशील साक्षी के रूप में पृथक् खड़ी है, और इसके प्रति जागरण समस्त बन्धन समाप्त करता है (श्लोक 25-42)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के केन्द्र में भागवत के सबसे सुन्दर चित्रों में से एक खड़ा है — भगवान् का हंस के रूप में प्रकट होना। कहा जाता है कि हंस जल में मिले दूध को पीकर जल छोड़ देता है, केवल दूध ग्रहण करता है; और इसी रूप में भगवान् ऋषियों को यह सिखाने आते हैं कि शुद्ध आत्मा को मन तथा विषयों के उस मिश्रण से कैसे पृथक् करें जिसमें वह घुली-सी प्रतीत होती है। इस चित्र में गहरी कोमलता है। ब्रह्मा भी, प्राणियों में प्रथम, एक ऐसे प्रश्न से मिलते हैं जिसका वे उत्तर नहीं दे सकते, और वही एक बुद्धिमानी का कार्य करते हैं: वे अपना मन भगवान् की ओर मोड़ते

हैं। और भगवान् न डाँटते हैं न रोकते हैं; वे तुरन्त, एक कोमल तथा सुन्दर रूप में आते हैं, और उत्तर किसी अमूर्तता से नहीं, अपितु इस विस्मयकारी आत्मीयता से देते हैं कि जो कुछ हम अनुभव करते हैं वह उन्हीं से भिन्न कुछ नहीं। अध्याय का व्यावहारिक हृदय भी उतना ही दयालु है। यह यह नहीं माँगता कि हम कभी रजस् का खिंचाव अनुभव न करें; यह स्पष्ट बताता है कि उत्तम मन भी विचलित होगा, और केवल यही माँगता है कि हम उसे बार-बार समेटते रहें, उस विवेकी की भाँति जो अपने भटकते मन को भगवान् की ओर लौटाता है। और यह हमें साक्षी का महान् रहस्य देकर जाता है: कि हमारे जाग्रत्, स्वप्न तथा सुषुप्ति के पीछे, इन सबसे अछूती, वह शान्त आत्मा है, शान्ति में देखती हुई। उस साक्षी की एक झलक भी, क्षण भर के लिए, उस लम्बे स्वप्न से जागने का आरम्भ है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, हंस के मार्ग का अभ्यास कीजिए — शुद्ध को मिश्रित से पृथक् करना सीखते हुए। किसी शान्त समय, बैठिए और अपने मन को देखिए जैसे उसके विचार, भाव तथा वेग आते-जाते हैं, और धीरे से अनुभव कीजिए कि आप वही हैं जो इन्हें देखता है, न कि ये क्षणिक अवस्थाएँ स्वयं। जब भी मन किसी चंचल लालसा की ओर खिंचे, उसे बिना कठोरता समेटिए, और हृदय में विराजमान भगवान् की ओर मोड़िए, उनके पवित्र नाम का धीरे से जप करते हुए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” इस सरल सजगता में आप दिव्य हंस की उसी शिक्षा का अनुसरण करते हैं — अपरिवर्तनशील आत्मा को परिवर्तनशील मन से पृथक् करते हुए, और क्षण भर के लिए ही सही, उस शान्त साक्षी के रूप में विश्राम करते हुए जो भगवान् ने आपको प्रकट किया।

उपसंहार

एकादश स्कन्ध का त्रयोदश प्रवचन, दिव्य हंस की गीता, उद्धव को भगवान् के उपदेश को मन तथा प्रकृति के गुणों पर विजय में ले जाता है। सत्त्व, रजस् तथा तमस्, वे सिखाते हैं, बुद्धि के हैं, आत्मा के नहीं; सत्त्व के अभ्यास से मनुष्य रजस् तथा तमस् को जीतता है, और अन्ततः सत्त्व से भी ऊपर शान्ति में उठता है। जब उद्धव पूछते हैं कि लोग उन सुखों का पीछा क्यों करते हैं जिन्हें वे हानिकारक जानते हैं, तब भगवान् रजस् की चंचल शक्ति तथा विवेकी जनों द्वारा मन के धैर्यपूर्ण समेटने को प्रकट करते हैं। तत्पश्चात् वे यह पावन स्मृति साझा करते हैं कि कैसे वे सनक तथा उनके भाइयों के प्रश्न का उत्तर देने एक तेजस्वी हंस के रूप में प्रकट हुए, यह सिखाते हुए कि जो कुछ अनुभव किया जाता है वह उन्हीं से भिन्न कुछ नहीं, और कि आत्मा जाग्रत्, स्वप्न तथा सुषुप्ति की अपरिवर्तनशील साक्षी है। उनका सन्देह दूर होने पर, ऋषियों ने उनकी उपासना की, और हंस अपने धाम लौट गए। इस प्रकार यह ज्योतिर्मय अध्याय हमें शुद्ध आत्मा को परिवर्तनशील मन से पृथक् करने तथा हृदय के भीतर भगवान् में, जागे हुए तथा शान्त, विश्राम करने का आह्वान करता है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), एकादश स्कन्ध, त्रयोदश प्रवचन, पृष्ठ 569–572।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बन्ध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-13-hamsa-gita-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

